श्रीशिवपुराण

प्रथम खण्ड

(सरल भाषानुवाद सहित)

सम्पादक:

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

चारों वेद, १०८ उपनिषद, षट् दर्शन,

२० स्मृतियाँ और १८ पुराणों के

प्रसिद्ध भाष्यकार

寄贈 昭和46年度科学研究費購入図書 東外大・東洋文化研 合同海外学術調査団 氏

東京外国語大学 157015 47.3.31 図書館蔵書

प्रकाशक:

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब (वेद नगर) बरेली

ज्ञान-विज्ञान का 'भाण्डागार' ही कहा जा सकता है। उनमें केवल धर्म, नीति, चरित्र की शिक्षा देने वाली कथायें और उपदेश ही नहीं, वरन् राजनीति शास्त्र ज्योतिष-शास्त्र, स्वर-शास्त्र, आयुर्वेद वृक्ष-विज्ञान, गृह निर्माण-शास्त्र, मूर्तिकला आदि सैकड़ विषय भरे पड़े हैं।

इसलिये इस बात की बहुत अधिक आवश्यकता है कि पुराणों का एक 'सुलभ संस्करण' ऐसा प्रस्तुत किया जाय जिसमें उनकी समस्त उपयोगी सामग्री आ जाय और जिसे जन साधारण खरीदने और पढ़ने में भी समर्थ हो सकें। ऐसे संस्करण में से बार-बार दुहराये जाने वाले विवरणों और साम्प्रदायिक द्वेषपूर्ण कटूक्तियों को पृथक् करने से उनकी एक ऐसी त्रुटि का भी, जिसके कारण अनेक सुशिक्षित व्यक्ति उन पर आक्षेप करते रहते हैं, निवारण हो जायगा। लोग अपने-अपने सम्प्रदाय का प्रचार करें, उसकी विशेषताओं, महत्व का वर्णन करें, इसमें कोई एतराज की बात नहीं है, पर धार्मिक क्षेत्र में द्वेषयुक्त वातावरण उत्पन्न करना सत्पुरुषों का लक्षण नहीं माना जा सकता।

बहुत बड़े और विस्तारयुक्त ग्रन्थों के संशोधित तथा सारांश रूप में उपलब्ध हो सकने से उनके प्रचार और उपयोगिता में वृद्धि हो जाती है। 'महाभारत' का परिचय अधिकांश व्यक्तियों को उसके संक्षिप्त संस्करणों से ही हुआ है। 'विष्णु पुराण' को सभी जगह २३ हजार श्लोकों का लिखा है, पर उसके वर्तमान संस्करण में सात हजार श्लोक हैं और उसी को पूर्ण माना जाता है। यही बात 'कूर्म पुराण' आदि के विषय में भी देखी जा रही है। इससे विदित होता है कि इन ग्रन्थों के वृहत् और लघु-संस्करण हमेशा से होते रहे हैं। स्मृतियों में भी हारीत, यम आदि स्मृतियों के छोटे-बड़े संस्करण प्राचीन काल से चले आ रहे हैं। इसलिये हमको पूरा विश्वास है कि हमारी यह संशोधित 'पुराण-माला' अपने ढंग की अनुपम सिद्ध होगी और इस महत्वपूर्ण साहित्य को लोक-प्रिय और बहुचर्चित बनाने में सफल होगी।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

विषयानुक्रमणिका

भूमिका ३—३२

श्रीशिवपुराण माहात्म्य

१	शिवपुराण महत्व	३७
२	देवराजमुक्ति वर्णन	४२
३	चंचुला वैराग्य वर्णन	४३
४	चंचुला की सद्गति	५१
५	बिन्दुग की सद्गति	५३
६	शिवपुराण श्रवण-विधि	६१
७	शिवपुराण के श्रोताओं के विधि-निषेध और पूजन-विधि	६७

१—विद्येश्वर संहिता

१	तीर्थराज के महायज्ञ में मुनियों का सूतजी से प्रश्न	७१
२	शिवपुराण द्वारा कलिकल्मष विध्वंस और संहिता भेद-वर्णन	७६
३	षट कुल वाले मुनियों से साध्य-साधन वर्णन	८३
४	विष्णु और ब्रह्मा के प्रति शिवरात्रि-व्रत का महाफल कथन	८७
५	शिव द्वारा ब्रह्मा-विष्णु को पंचकृत्य तथा ओंकार का उपदेश	९०
६	शिवलिंग का स्थापन, पूजन, दान वर्णन	९३
७	सदाचार वर्णन	१०२
८	अग्नि-यज्ञादि वर्णन	११३
९	देव-यज्ञादि में देशकाल-पात्र वर्णन	११७
१०	प्रणव पंचाक्षर-मंत्र का माहात्म्य	१२०
११	बंध-मोक्ष स्वरूप शिवलिंग का माहात्म्य	१२९
१२	वैदिक पार्थिव पूजन वर्णन	१३८
१३	शिव नैवेद्य भक्षण निर्णय और विल्व-माहात्म्य	१४३
१४	शिवनाम का माहात्म्य	१४५

१५	भस्म माहात्म्य का वर्णन	१५२
१६	रुद्राक्ष की महिमा का वर्णन	१६४

रुद्र--संहिता--सृष्टिखण्ड

१	नारद का काम-विजय करके अहंकार करना	१७३
२	विष्णु की माया से कन्या को देखकर नारद जी का मोहित होना और शिवगणों को शाप देना	१८०
३	नारद का लोकोपकारार्थ प्रश्नोत्तर, महाप्रलय वर्णन, विष्णु की उत्पत्ति	१८८
४	ओंकार से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, शब्द ब्रह्म-निरूपण	१९२
५	हरिहर की अभेदता तथा परम शिव-तत्व वर्णन	१९८
६	शिवपूजन विधि और उसका फल	१९९
७	लिंगपूजा विधान, स्नान, पूजाविधि स्तोत्रपाठ	२१०
८	विशेष पुष्पों से शिव पूजन का फल	२२१

रुद्र संहिता—सती खण्ड

९	हिमालय पर शिव और सती का विहार	२२६
१०	शिव का सती के प्रति मोक्षशास्त्र का कथन	२३५
११	दक्ष और शिव के विरोध का कारण	२४०
१२	दक्ष-यज्ञ में शिव का भाग न होने पर दधीचि का विरोध	२४७
१३	सती का पिता के यज्ञ में जाने के लिये आग्रह	२५५
१४	दक्ष द्वारा सती का तिरस्कार और सती का शिव माहात्म्य कथन	२६०
१५	यज्ञ-स्थल में सती का देह त्याग और शिवगणों का भृगु द्वारा पराभव	२६९
१६	दैववाणी द्वारा दक्ष की भर्त्सना और भविष्य-कथन	२७३
१७	सती का मरण सुनकर शिवजी का वीरभद्र को प्रकट करना	२७८
१८	वीरभद्र का सेना सहित गमन	२८६

१९	यज्ञ में दैवी उत्पातों का दर्शन और दक्ष की विष्णु से प्रार्थना	२९१
२०	विष्णु द्वारा शिव का सामर्थ्य वर्णन	२९४
२१	वीरभद्र द्वारा लोकपालों की पराजय	३०१
२२	देवताओं का वीरभद्र से संग्राम और पराजय तथा दक्ष का सिर काटा जाना	३११

रुद्र संहिता-पार्वती खंड

२३	सांख्य और वेदान्त विषय में शिव-पार्वती सम्वाद	३२०
२४	इन्द्र का कामदेव को बुलाकर शिव-पार्वती का विवाह के लिए भेजना	३२४
२५	काम द्वारा शिवजी का पार्वती पर मोह उत्पन्न करना	३२९
२६	शिव द्वारा कामदेव का भस्म किया जाना	३३५
२७	पार्वती को नारदजी का पंचाक्षर मंत्र का उपदेश	३३८
२८	शिवजी की प्राप्ति के लिये पार्वती का तप करना	३४३
२९	देवताओं का तप से व्याकुल होकर ब्रह्मलोक जाना	३५४
३०	विष्णु और ब्रह्मा के आग्रह से शिव का पार्वती से विवाह को सम्मत होना	३६१
३१	सप्तर्षियों का हिमालय को विवाह के लिए सम्मत करके अपने स्थान को जाना	३७३
३२	शिवजी की बरात का सजाया जाना	३७७
३३	शिव पार्वती का विवाहोत्सव	३८५
३४	द्विजपत्नी द्वारा पार्वती को पतिव्रत धर्म का उपदेश	३८९

रुद्र-संहिता-कुमार खंड

३५	कुमार(स्कन्द) द्वारा तारकासुर का वध और देवोत्सव	४०२
३६	बाण और प्रलम्ब का वध	४१०
३७	गणेश को प्रथम पूज्य-पद दिया जाना और विवाह	४१५

रुद्र-संहिता-युद्ध-खंड

३८	शंखचूड और शिव में परस्पर दूत प्रेषण	४२३
३९	देवता-दानवों का रोम हर्षण युद्ध	४३१
४०	शंखचूड का कार्तिकेय आदि महावीरों से युद्ध	४३६
४१	काली और शंखचूड में दिव्य अस्त्र-युद्ध	४४१
४२	शिव और शंखचूड का तुमुल-संग्राम	४४८
४३	विष्णु का ब्राह्मण रूप धारण करके शंखचूड का कवच मांग लेना और शंखचूड का वध	४५४

शत-रुद्र-संहिता

१	शिवजी की आठ मूर्तियों (शर्व, भव रुद्र आदि) का वर्णन	४६०
२	अर्द्धनारीश्वर शिव का प्रादुर्भाव	४६२
३	श्वेतमुनि और ऋषभदेव के रूप में शिवावतार	४६७
४	ग्यारह रुद्रावतारों का वर्णन	४७४
५	अत्रिमुनि के तप के प्रभाव से दत्तात्रय दुर्वासा और चन्द्रमा का जन्म	४८०
६	दधीचि का अस्थिदान और उनकी स्त्री में शिव का पिप्पलाद रूप से जन्म	४८१
७	पिप्पलाद का विवाह, पिप्पलाद स्मरण से शनि पीड़ा का निवारण	४८४
८	पार्वती की परीक्षा के लिये शिव का ब्रह्मचारी के रूप में अवतार	४८५

श्री शिवपुराण

※ प्रथम खण्ड ※

शिवपुराण-महात्म्यम्

※ शिवपुराण—महत्व ※

हे हे सूत महाप्राज्ञ सर्वसिद्धान्तवित्प्रभो।
आख्याहि मे कथासारं पुराणानां विशेषतः ॥१
सदाचारश्च सद्भक्तिर्विवेको वर्द्धते कथम्।
स्वविकारनिरासश्च सज्जनैः क्रियते कथम् ॥२
जीवाश्चासुरतां प्राप्ताः प्रायो घोरे कलाविह।
तस्य संशोधने किं हि विद्यते परमायनम् ॥३
यदस्ति वस्तु परमं श्रेयसां श्रेय उत्तमम्।
पावनं पावनानां च साधनं तद्वदाधुना ॥४
येन तत्साधनेनाशु शुद्धयत्यात्मा विशेषतः।
शिवप्राप्तिर्भवेत्तात सदा निर्मलचेतसः ॥५

शौनकजी ने कहा—हे सूतजी! हे सर्वसिद्धान्तो के ज्ञाता महा-पंडित! आप विशेषकर पुराणों की कथा का सार मेरे प्रति कहिये ॥१॥ सदाचार, भक्ति के द्वारा विवेक की वृद्धि किस प्रकार होती है और सज्जन अपने विकारों को किस प्रकार शान्त करते हैं, सो कहिये ॥२॥ इस घोर कलि-काल में प्राणी असुरत्व को प्राप्त हुये हैं, उनका शोधन किस प्रकार हो सो आप कहने की कृपा करें ॥३॥ जो वस्तु अत्यन्त श्रेष्ठ और कल्याण देने वाली है तथा जो पवित्रों से भी पवित्र है और उत्तम साधन रूप है सो आप मुझसे कहें ॥४॥ आत्मा जिस साधन के द्वारा शुद्ध होजाता है और सदा निर्मल चित्त वाले व्यक्तियों को भगवान् शिव प्राप्त हो जाते हैं ॥५॥